

WTO में सीमा पार वपिरेषण लागत कम करने हेतु भारत का प्रयास

प्रलमिस के लयि:

[वशिव वयापार संगठन](#), [अंतरराषट्रीय मुद्रा कोष](#), [सतत विकास लक्ष्य](#), [G20](#), [यूनफाइड पेमेंट्स इंटरफेस](#), [मुक्त वयापार समझौते](#), [कृषिपर समझौता](#)

मेन्स के लयि:

[सीमापार वपिरेषण](#), आर्थिक विकास के लयि अंतरराषट्रीय सहयोग

[स्रोत: बजिनेस लाइन](#)

चर्चा में क्यों?

अबू धाबी में आयोजित [वशिव वयापार संगठन](#) के 13वें मंत्रसित्रीय सम्मेलन 2024 में भारत द्वारा [सीमापार वपिरेषण](#) की लागत को कम करने प्रस्ताव कया गया जसिका मोरक्को और वयितनाम जैसे देशों ने समर्थन कया ।

- हालाँकि WTO के कुछ सदस्यों ने इस प्रस्ताव पर असहमतजिताई, जो वशिव स्तर पर इस महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर आम सहमतबनाने में वदियमान चुनौतियों को दर्शाता है ।

सीमा पार वपिरेषण की लागत

- वपिरेषण लागत वह शुल्क है जो कसिी व्यक्तिद्वारा अंतरराषट्रीय स्तर पर धन का वपिरेषण करने पर लया जाता है । वपिरेषति राश और प्रयुक्त वधि के आधार पर लया जाने वाला शुल्क अलग-अलग हो सकता है ।
- [अंतरराषट्रीय मुद्रा कोष \(IMF\)](#) के अनुसार, वर्तमान में वशिव में औसत वपिरेषण लागत भेजी गई कुल राशिका 6.25% है ।
 - 200 अमेरिकी डॉलर से कम राश के वपिरेषण हेतु लया गया शुल्क प्रायः औसतन 10% होता है तथा प्रवास के अपेक्षाकृत छोटे कॉरडोर में यह मूलधन का 15-20% तक हो सकता है ।

नोट:

- वर्ष 2016 में [G20](#) राषट्रों ने वपिरेषण लागत को 3% से नीचे लाने (जैसा कि SDG 10.c में उल्लखित है) तथा वर्ष 2030 तक 5% से अधिक लागत वाले वपिरेषण कॉरडोर को समाप्त करने के लक्ष्य को अपनाकर संयुक्त राषट्र के 2030 एजेंडे को एकीकृत कया ।
- वर्ष 2021 में इस प्रतबिद्धता की पुष्ट करते हुए, [G20](#) राषट्रों ने सीमा पार भुगतान बढ़ाने के लयि [G20 रोडमैप](#) के माध्यम से SDG 10.c के प्रत अपनी प्रतबिद्धता पर ज़ोर दया, जसिका लक्ष्य वपिरेषण की औसत लागत को 3% से कम करना था ।

सीमा पार वपिरेषण की लागत के संबंध में भारत का प्रस्ताव क्या है?

- प्रस्ताव: भारत द्वारा मार्च 2024 में वशिव वयापार संगठन के 13 वें मंत्रसित्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत मसौदा प्रस्ताव का उद्देश्य वपिरेषण की वैश्विक औसत लागत को कम करना है, जो वर्तमान में [सतत विकास लक्ष्य \(SDG\)](#) के 3% के लक्ष्य से दोगुने से भी अधिक है ।
 - भारत का सुझाव है कि डिजिटल धनवपिरेषण, जसिकी औसत लागत 4.84% है, अधिक संवहनीय है और इसे बढ़ावा दया जाना चाहयि ।
 - भारत ने वपिरेषण लागत को कम करने के लयि सफारिशें करने हेतु एक कार्य योजना का भी प्रस्ताव कया है ।
- वपिरेषण लागत में कटौती की भारत की आवश्यकता: भारत को [2023 में वशिव स्तर पर सबसे अधिक वपिरेषण प्राप्त हुआ, जो 125 बलियिन अमेरिकी डॉलर था ।](#)
 - वपिरेषण लागत को कम करने से धन के अंतरवाह में और अधिक वृद्धि हो सकती है । वर्ष 2023 में भारत ने वपिरेषण शुल्क पर

लगभग 7-8 बलियन अमरीकी डॉलर का वहन किया।

- वर्ष 2023 में भारत वपिरेषण अंतरवाह सूची में शीर्ष पर रहा, उसके बाद मैक्सिको (66 बलियन अमरीकी डॉलर), चीन (50 बलियन अमरीकी डॉलर), फिलीपींस (39 बलियन अमरीकी डॉलर) और पाकस्तान (27 बलियन अमरीकी डॉलर) का स्थान था।
- वर्ष 2023-24 में, वदश में नवास करने वाले भारतीयों ने भारत में रकिरंड स्तर पर **107 बलियन अमरीकी डॉलर की धनराशि** का वपिरेषण किया, जो लगातार दूसरे वर्ष **100 बलियन अमरीकी डॉलर** से अधिक थी।
- नवल वपिरेषण राशि इसी अवधि के दौरान **प्रत्यक्ष वदशी नविश (FDI)** और पोर्टफोलियो नविश से प्राप्त संयुक्त **54 बलियन अमेरिकी डॉलर से लगभग दोगुनी** है।
 - वर्ष 2024 में प्रवासी भारतीयों से प्राप्त नवल वपिरेषण **119 बलियन अमेरिकी डॉलर** था। आय और संबंधित व्यय के प्रत्यावर्तन के बाद, नवल नजी अंतरण **107 बलियन अमेरिकी डॉलर** हुआ।
- भारतीय रजिस्टर बैंक (RBI)** के सर्वेक्षण के अनुसार, **संयुक्त राज्य अमेरिका** मुख्य योगदानकर्ता था, जो कुल वपिरेषण का **23%** था। अधिकांश वपिरेषण पारिवारिक सहायता के लिये होते हैं, जबकि कुछ जमाराशिके रूप में नविश करने हेतु किये जाते हैं।
- वपिरेषण की मात्रा प्रवास स्तर, मूल देशों में रोजगार की स्थिति और धन वपिरेषण की लागत से प्रभावित होती है।

भारत में वपिरेषण का अंतरवाह

- वर्ष 2023 में भारत वपिरेषण अंतरवाह सूची में शीर्ष पर रहा, उसके बाद मैक्सिको (66 बलियन अमरीकी डॉलर), चीन (50 बलियन अमरीकी डॉलर), फिलीपींस (39 बलियन अमरीकी डॉलर) और पाकस्तान (27 बलियन अमरीकी डॉलर) का स्थान था।
- वर्ष 2023-24 में, वदश में नवास करने वाले भारतीयों ने भारत में रकिरंड स्तर पर **107 बलियन अमरीकी डॉलर की धनराशि** का वपिरेषण किया, जो लगातार दूसरे वर्ष **100 बलियन अमरीकी डॉलर** से अधिक थी।
- नवल वपिरेषण राशि इसी अवधि के दौरान **प्रत्यक्ष वदशी नविश (FDI)** और पोर्टफोलियो नविश से प्राप्त संयुक्त **54 बलियन अमेरिकी डॉलर से लगभग दोगुनी** है।
 - वर्ष 2024 में प्रवासी भारतीयों से प्राप्त नवल वपिरेषण **119 बलियन अमेरिकी डॉलर** था। आय और संबंधित व्यय के प्रत्यावर्तन के बाद, नवल नजी अंतरण **107 बलियन अमेरिकी डॉलर** हुआ।
- भारतीय रजिस्टर बैंक (RBI)** के सर्वेक्षण के अनुसार, **संयुक्त राज्य अमेरिका** मुख्य योगदानकर्ता था, जो कुल वपिरेषण का **23%** था। अधिकांश वपिरेषण पारिवारिक सहायता के लिये होते हैं, जबकि कुछ जमाराशिके रूप में नविश करने हेतु किये जाते हैं।
- वपिरेषण की मात्रा प्रवास स्तर, मूल देशों में रोजगार की स्थिति और धन वपिरेषण की लागत से प्रभावित होती है।

वपिरेषण लागत में कटौती से क्या लाभ है?

- वैश्विक भारतीय प्रवासी:** कम लागत से प्रेषक के परिवार को अधिक धन प्राप्त होगा तथा बचौलियों को प्राप्त होने वाले शुल्क में कमी आएगी।
 - अनवासी भारतीयों (NRI) समुदाय और वदशी यात्रियों के लिये** भारत से धन अंतरण करना सरल और संवहनीय होगा।
- भारतीय MSME को लाभ:** वदशी मुद्रा लागत में कमी से **भारतीय वस्तुएँ और सेवाएँ अधिक प्रतस्पर्धी हो जाएंगी**, जिससे लाभ मार्जिन में वृद्धि होगी।
 - वपिरेषण लागत में कमी से सीमा पार लेन-देन अधिक कुशल हो जाएगा, जो **कभारत सरकार के इज ऑफ ड्रिंग बिजनेस के लक्ष्य के अनुरूप** होगा।
- घरेलू अर्थव्यवस्था और UPI लेनदेन:** कम लागत पर वपिरेषण अंतरवाह में वृद्धि से घरेलू मुद्रा की स्थिति में सुधार होने की संभावना है और व्यक्तिगत उपभोग पैटर्न में सुधार हो सकता है।
 - वपिरेषण लागत में कटौती वैश्विक बाजारों में **यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI)** की पहुँच में वसितार करने हेतु उत्प्रेरक का काम कर सकती है।
- वित्तीय समावेशन: कम वपिरेषण लागत से वंचित आबादी के लिये वित्तीय सेवाओं तक पहुँच में सुधार हो सकता है**, जिससे वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहन मिलेगा।
 - चूँकि वर्ष 2023 में कुल वपिरेषण अंतरवाह का **78% नमिन और मध्यम आय वाले देशों (LMIC) में हुआ**, इसलिये देशों के भीतर तथा उनके बीच असमानता को कम करने के लिये लेनदेन लागत को कम करना महत्वपूर्ण है।
- सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को कम करना:** कम वनिमिय लागत यह सुनिश्चित करती है कि **अधिक धनराशि जरूरतमंदों तक पहुँचे**, जिससे आर्थिक असमानताओं को कम करने और इन क्पेत्रों में विकास को समर्थन देने में मदद मिलती है।
 - कम लागत का अर्थ है कि प्रेषक अपना अधिक धन अपने पास रख सकेंगे, जिससे उनके मूल देशों में बचत और नविश में वृद्धि हो सकेगी।

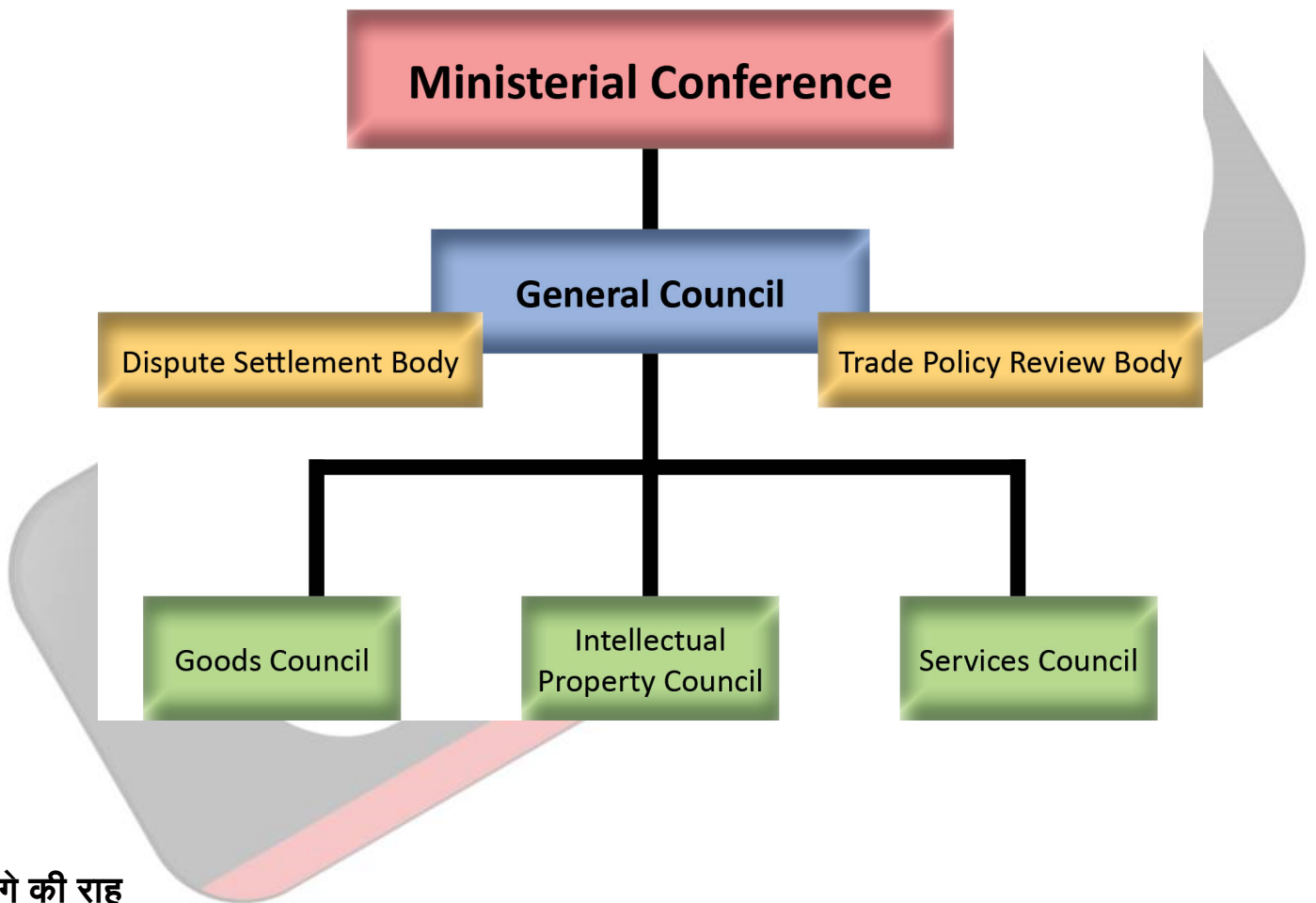
वशिव व्यापार संगठन के संबंध में मुख्य तथ्य क्या हैं?

- उत्पत्ति:** वर्ष 1994 में हस्ताक्षरित मारकेश समझौते ने वशिव व्यापार संगठन की स्थापना की, जो आधिकारिक तौर पर 1 जनवरी 1995 को शुरू हुआ।
 - यह **टैरिफि और व्यापार पर सामान्य समझौते (GATT) का अनुवर्ती** था और यह अधिक व्यापक वैश्विक व्यापार संगठन की स्थापना के लिये **उरुग्वे राउंड नेगोशियेशन (वर्ष 1986-94)** का हस्सा था।
 - सदस्य:** वशिव व्यापार संगठन के 166 सदस्य हैं, जिनमें भारत (वर्ष 1995 से तथा 1948 से **GATT** का सदस्य) भी शामिल है तथा वशिव व्यापार में इसकी **हस्सेदारी लगभग 98%** है।
 - WTO सचवालय:** **जनिवा, स्वटिज़रलैंड** में स्थित WTO सचवालय, संगठन के कार्यों का समर्थन करता है, **लेकिन स्वयं इसके पास नरिणय लेने की शक्तियाँ नहीं हैं**।
 - सचवालय का नेतृत्व **महानदिशक करता है**, जो इसके संचालन की देखरेख करता है
- प्रमुख वशिव व्यापार संगठन सदिधांत:**

- **सर्वाधिक अनुकूल राष्ट्र (MFN):** इसके लिये आवश्यक है कि किसी एक सदस्य के लिये लगाई गई अनुकूल व्यापारिक शर्तें **अन्य सभी WTO सदस्यों पर भी लागू की जाएँ**।
- **राष्ट्रीय उपचार:** यह सदिधांत यह अनविर्य करता है कि जब कोई उत्पाद, सेवा या बौद्धिक संपदा बाज़ार में प्रवेश करती है, तो उसे घरेलू उत्पादों की तुलना में गैर-भेदभावपूर्ण समाधान मलिना चाहिये।
 - **किसी आयात पर सीमा शुल्क लगाना राष्ट्रीय व्यवहार का उल्लंघन नहीं है।**
- **वश्व व्यापार संगठन मंत्रसितरीय सम्मेलन:** यह संगठन का **सर्वोच्च नरिणयन नकियाय** है, जिसकी प्रत्येक दो वर्ष में बैठक होती है तथा बहुपक्षीय व्यापार समझौतों के अंतरगत आने वाले मामलों पर नरिणय लेने में सभी सदस्य इस बैठक में शामिल होते हैं।
- **वश्व व्यापार संगठन के महत्त्वपूर्ण समझौते:**
 - **सेवाओं में व्यापार पर सामान्य समझौता (GATS)**
 - **बौद्धिक संपदा अधिकारों के व्यापार-संबंधित समझौता (TRIPS)**
 - **व्यापार-संबंधी नविश उपाय (TRIMS)**
 - **सैनटिरी एंड फाइटो सैनटिरी (SPS)**
 - **कृषि समझौता (AoA)**

//

Structures of WTO



आगे की राह

- वश्व व्यापार संगठन के उप महानदिशक ने **वपिरेषण लागत में कटौती हेतु व्यापक समर्थन जुटाने के लिये जागरूकता और पहुँच बढ़ाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया**। **अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO)** और **वश्व बैंक** जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ सहयोग महत्त्वपूर्ण है।
- नरिबाध सीमा पार लेनदेन की सुविधा के लिये **देशों के वभिन्न डिजिटल वपिरेषण प्लेटफार्मों के बीच अंतर-संचालन को बढ़ावा देना**।
 - UPI जैसे डिजिटल चैनल कुछ लागत बचत प्रदान करते हैं, क्योंकि ये **गैर-डिजिटल चैनलों की तुलना में सस्ते होते हैं**।
- बाधाओं को कम करने और सीमा पार वपिरेषण को सुविधाजनक बनाने के लिये देशों के बीच वनियामक सामंजस्य को बढ़ावा देना चाहिये।

□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□:

प्रश्न: वकिसशील अर्थव्यवस्थाओं पर वपिरेषण लागत के प्रभाव का वशिलेषण कीजिये। वश्व व्यापार संगठन को भारत का प्रस्ताव इस मुद्दे को कैसे संबोधित करने का लक्ष्य रखता है?

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वरष के प्रश्न

??????:

प्रश्न 1. 'ऐग्रीमेंट ऑन ऐग्रीकल्चर (Agreement on Agriculture)', 'ऐग्रीमेंट ऑन द ऐप्लीकेशन ऑफ सैनटिरी ऐंड फाइटोसैनटिरी मेजरस (Agreement on the Application of Sanitary and Phytosanitary Measures)' और 'पीस क्लॉज़ (Peace Clause)' शब्द प्रायः समाचारों में कसिके मामलों के संदर्भ में आते हैं? (2015)

- (a) खाद्य और कृषि संगठन
- (b) जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र का रूपरेखा सम्मेलन
- (c) विश्व व्यापार संगठन
- (d) संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम

उत्तर: c

प्रश्न 2. नमिनलखिति में से कसिके संदर्भ में कभी-कभी समाचारों में 'ऐम्बर बॉक्स, ब्लू बॉक्स और ग्रीन बॉक्स' शब्द देखने को मलिते हैं? (2016)

- (a) WTO मामला
- (b) SAARC मामला
- (c) UNFCCC मामला
- (d) FTA पर भारत-EU वार्ता

उत्तर: a

??????:

प्रश्न 1. यदि 'व्यापार युद्ध' के वर्तमान परदृश्य में विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू.टी.ओ.) को जनिदा बने रहना है, तो उसके सुधार के कौन-कौन से प्रमुख क्षेत्र हैं, विशिष रूप से भारत के हति को ध्यान में रखते हुए? (2018)

प्रश्न 2. "विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू.टी.ओ.) के अधकि व्यापक लक्ष्य और उद्देश्य वैश्वीकरण के युग में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का प्रबंधन तथा प्रोन्नतकिरना है। परंतु (संधी) वार्ताओं की दोहा परधिभृतोन्मुखी प्रतीत होती है, जसिका कारण वकिसति एवं वकिकासशील देशों के बीच मतभेद है।" भारतीय परपिरेक्ष्य में, इस पर चर्चा कीजयि। (2016)